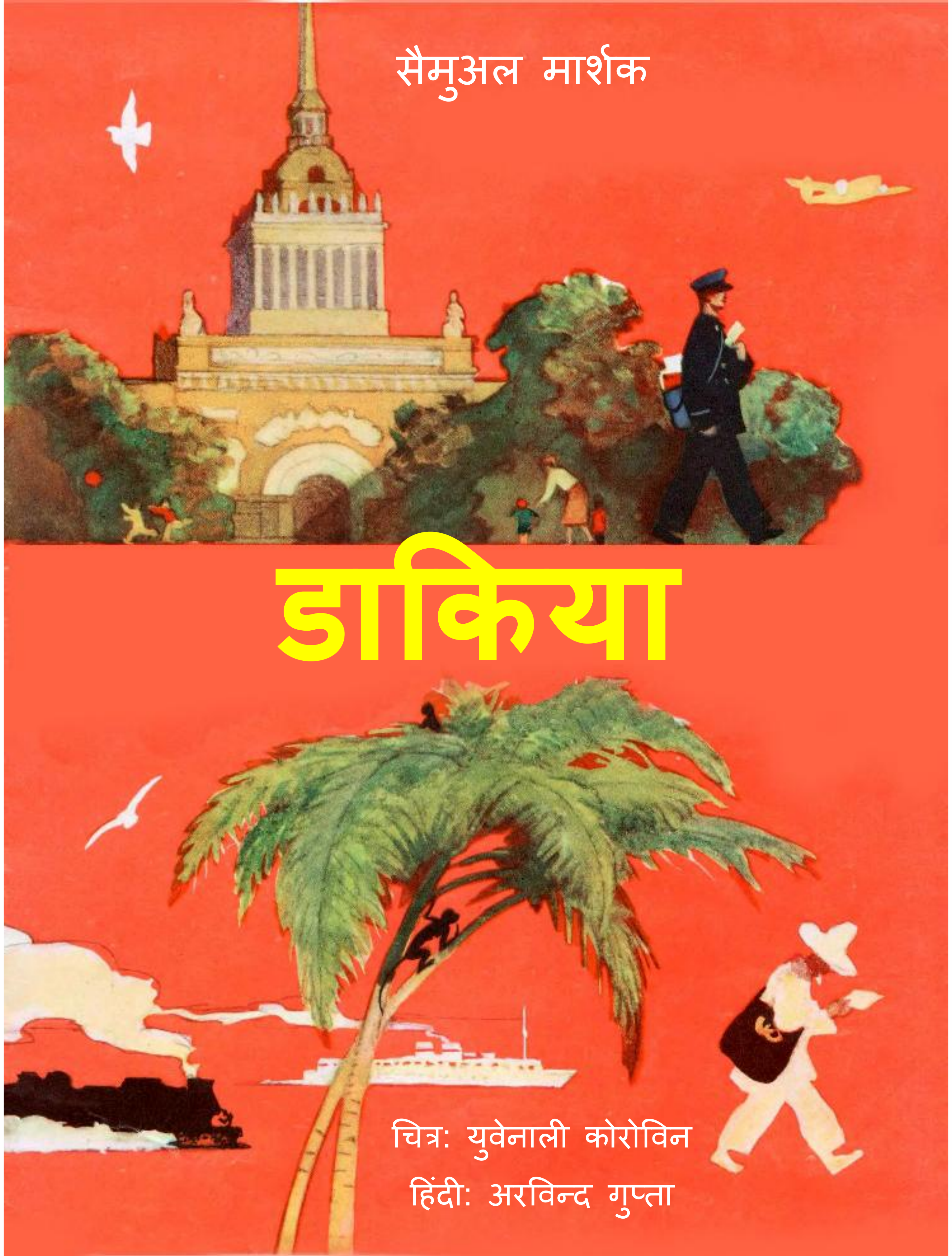
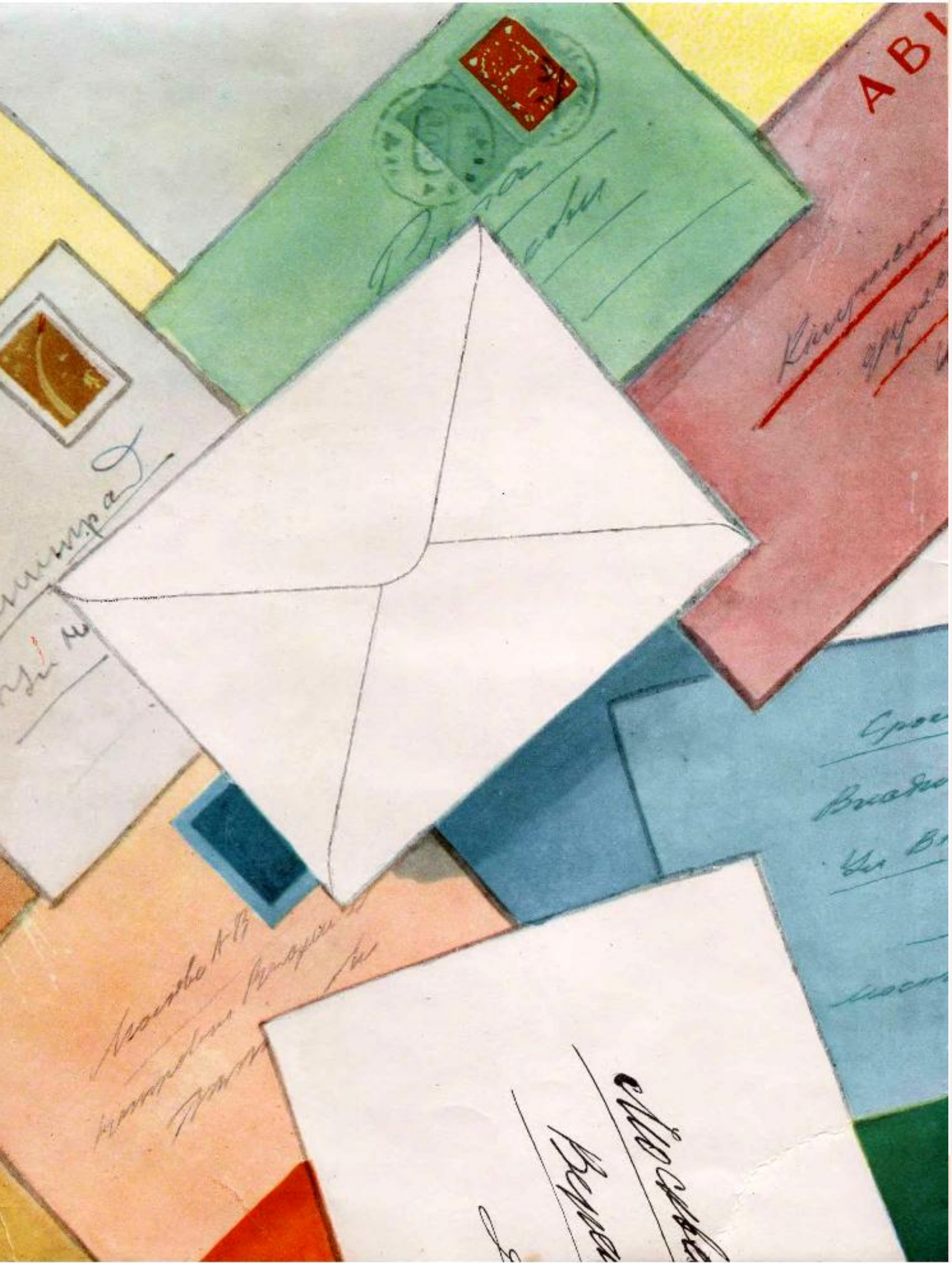
सैमुअल मार्शक

डाकिया



चित्र: युवेनाली कोरोविन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता



सैमुअल मार्शक



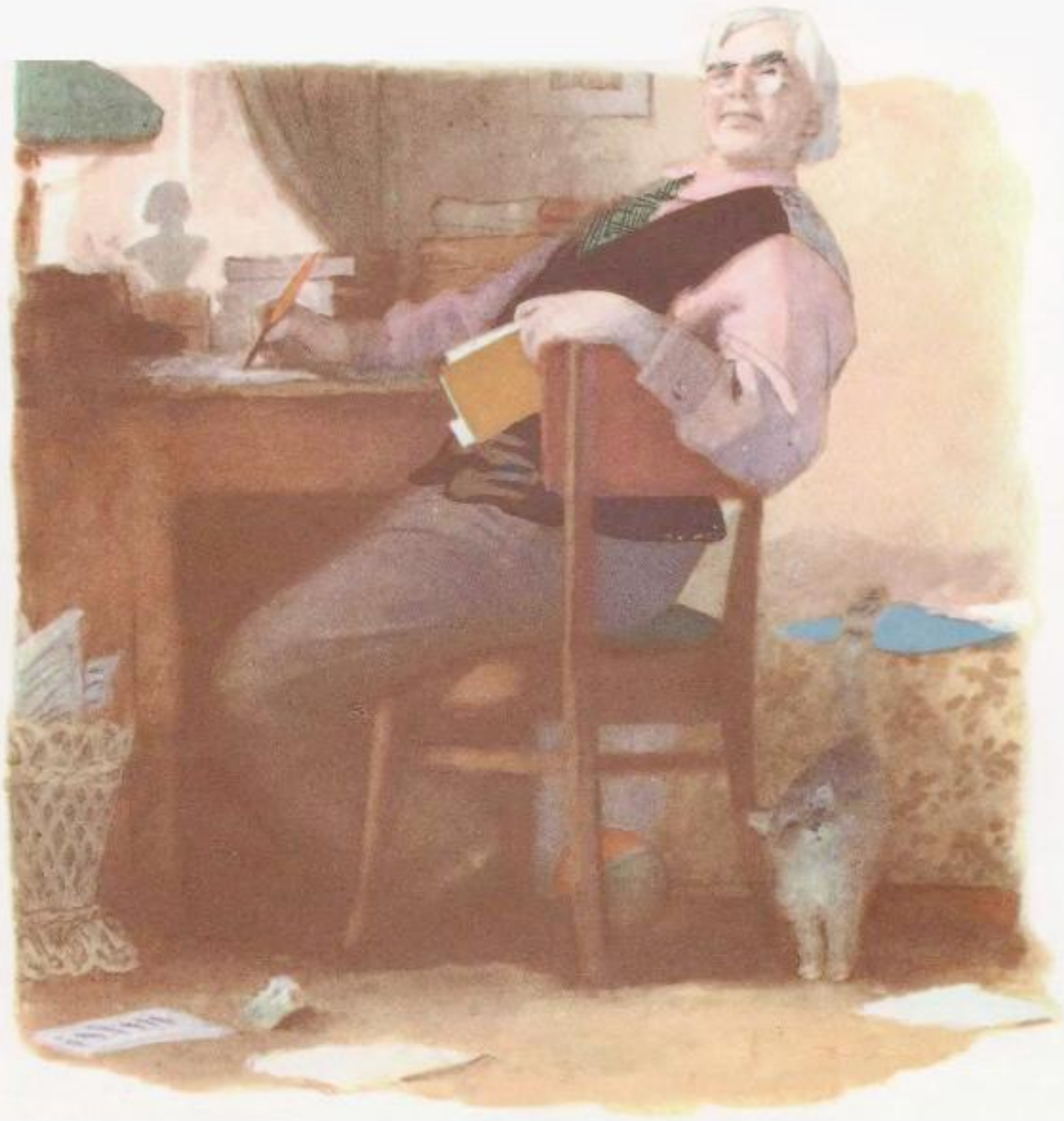
डाकिया



चित्र: युवेनाली कोरोविन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

PROGRESS & RADUGA

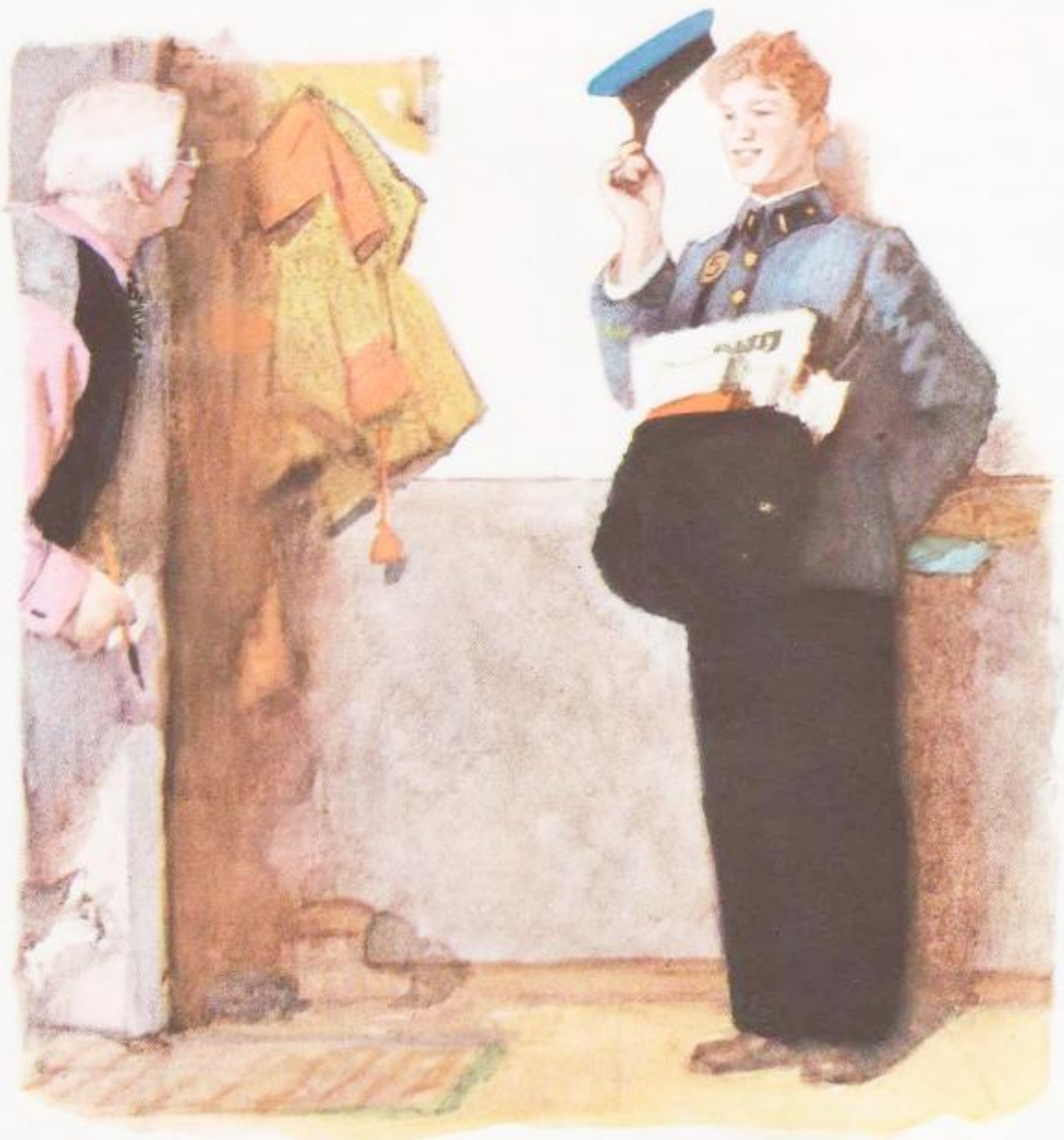


मेरे दरवाज़े पर कौन दस्तक देने आया
उसने पीछे बैग और आगे बैज लगाया
लेनिनग्राद की सरकारी वर्दी में
टोपी से बूट तक नीले रंग में?
वो वही है,
वो वही है,
जो आपके और मेरे लिए लाता है डाक!

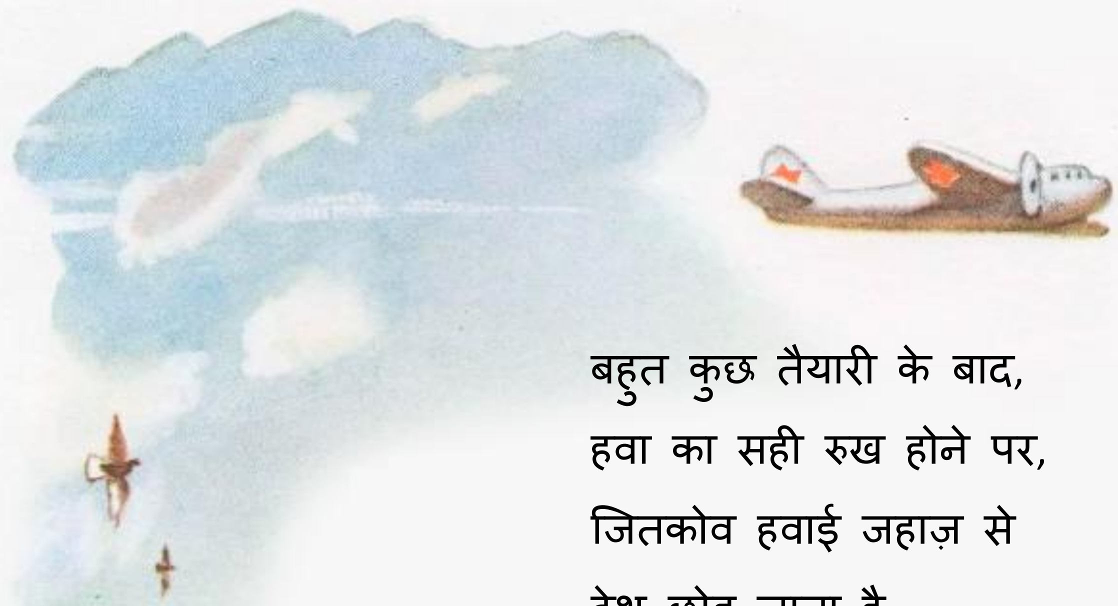
उसके पास
बहुत सारे पत्र हैं,
उसके बैग में
जिसे वह ढूँढ़ रहा है,
पोल्टावा,
खार्कोव,
गोर्की,
बालाक्लावा
और बाकू से.



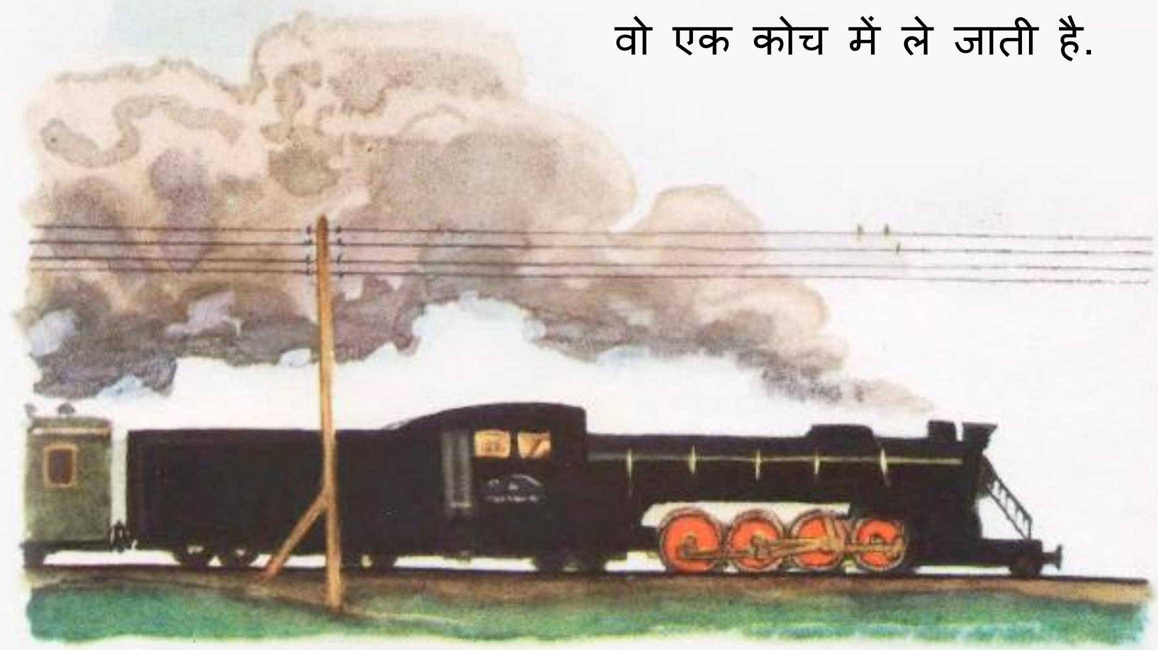
सात बजे उसका काम शुरू होता है,
दस बजे तक बंडल, कुछ हल्का होता है,
बारह बजे या डेढ़ बजे जाकर
डाकिए का काम खत्म होता है.

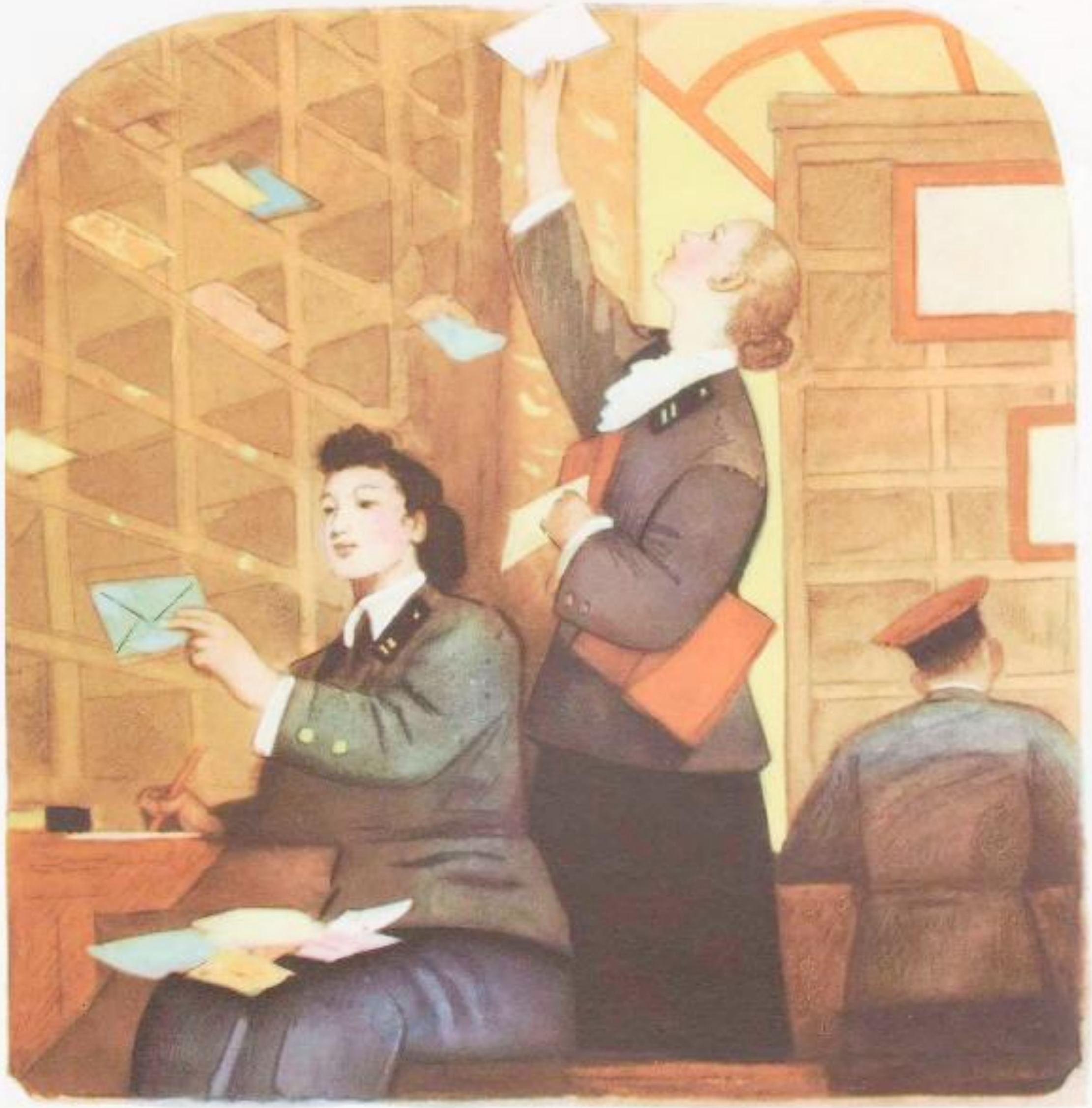


तुला से हमारे दोस्त जितकोव
के लिए एक विषेश पत्र आया है,
वो हमारे बगल में ही रहता है.
"पड़ोसी के लिए विषेश पत्र?
लेकिन अब जितकोव यहाँ नहीं रहता."
"मतलब - वह कहीं चला गया है?"
"वह बर्लिन गया है—सिर्फ कुछ दिनों के लिए."



बहुत कुछ तैयारी के बाद,
हवा का सही रुख होने पर,
जितकोव हवाई जहाज़ से
देश छोड़ जाता है.
लेकिन जल्द ही उसकी तलाश में
एक ट्रेन डाक लेकर जाती है,
उसके विशेष पत्र को
वो एक कोच में ले जाती है.





पैकेज बड़े करीने से
अच्छी तरह से छांटे गए,
(दो डाकियों ने बड़े ध्यान से)
उन पर मुहर लगाई और उन्हें ढेर में रख दिया,
फिर पते के अनुसार उन्हें पैक कर दिया,
फिर पत्र, पटरियों पर तेज़ी से दौड़े.



एक कार्ड—डबरोव्का के लिए,



एक डिब्बा—पोक्रोव्का के लिए,



एक नोट—क्लिन गाँव के लिए,



एक पत्र—मेनशाल के लिए



और साथ में एक विशेष पत्र भी
बर्लिन में हमारे मित्र के लिए

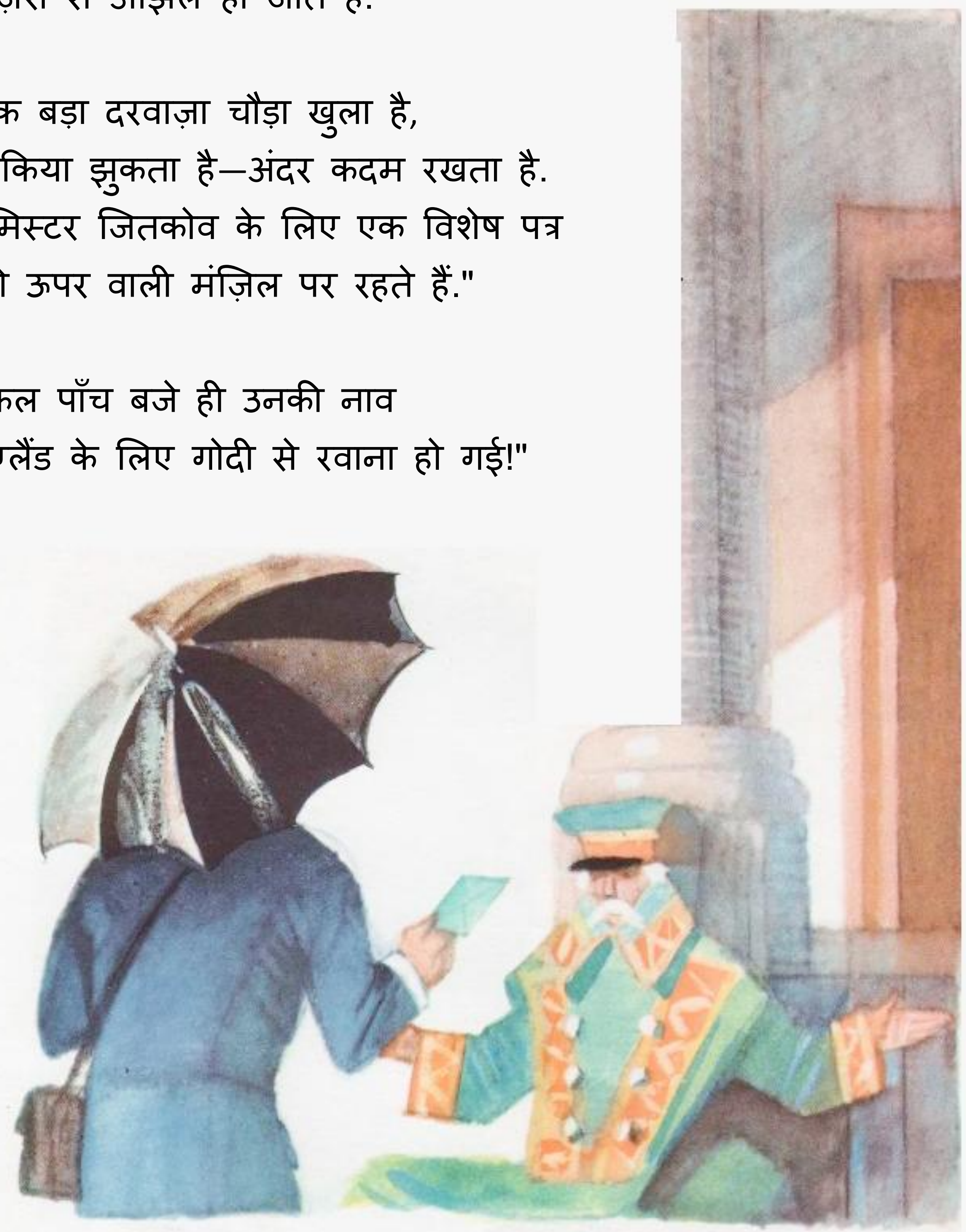


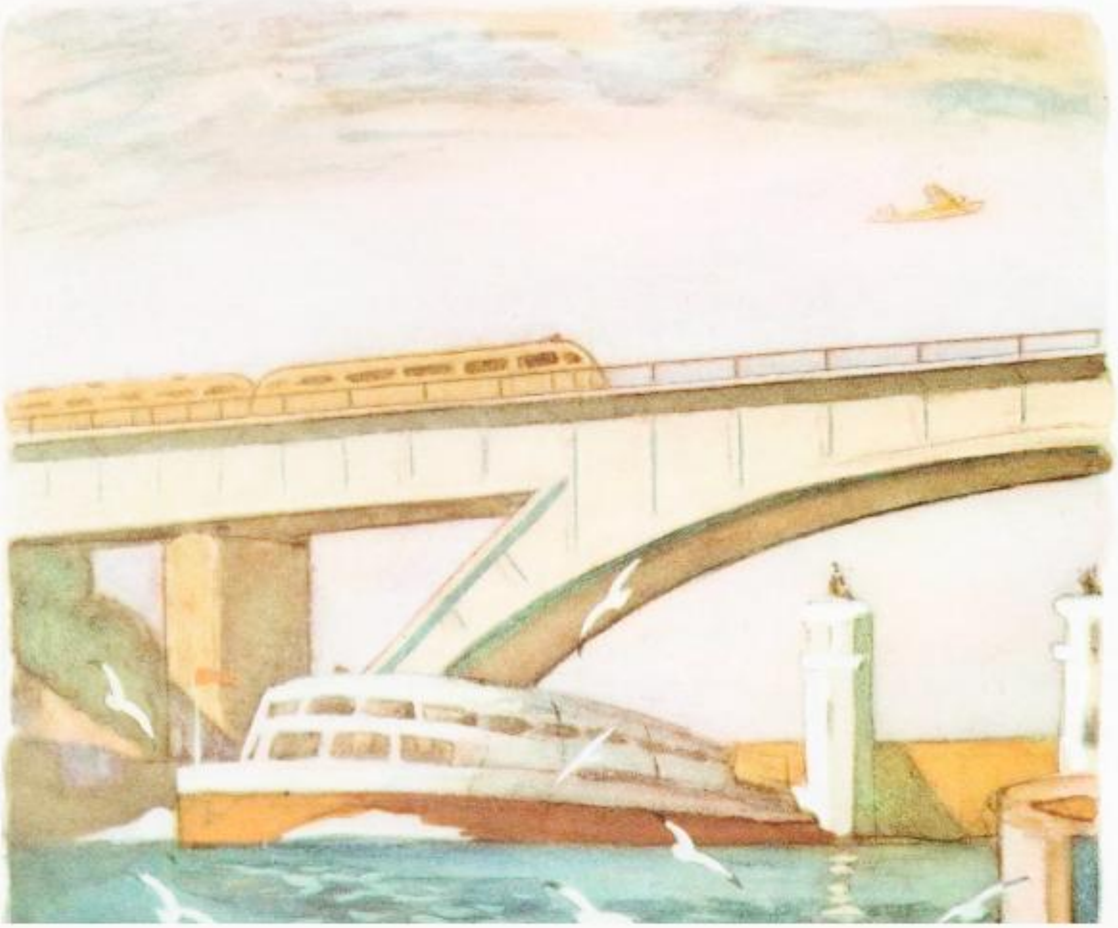
बर्लिन का डाकिया आ रहा है!
डिलीवरी पोस्टमैन आ रहा है.
उसकी पैंट साफ़-सुथरी है, जूतों पर पॉलिश है.
वो बड़े करीने से पेश आता है,
उसके पेशे की वही एक शर्त है,
उसके पद के लिए वो आवश्यक है.

लोग अंतहीन कतारों में भागते हैं
मशीनों की गड़गड़ाहट के बीच
वो सुबह से रात तक जल्द ही
नज़रों से ओझल हो जाते हैं.

एक बड़ा दरवाज़ा चौड़ा खुला है,
डाकिया झुकता है—अंदर कदम रखता है.
"मिस्टर जितकोव के लिए एक विशेष पत्र
जो ऊपर वाली मंज़िल पर रहते हैं."

"कल पाँच बजे ही उनकी नाव
इंग्लैंड के लिए गोदी से रवाना हो गई!"





डाक अपने आप कहीं भी नहीं पहुँचेगी.
लेकिन डाक विभाग की बदौलत -
वो रेल या जलयान
या हवाई जहाज़ द्वारा
किसी दूर-दराज के तट
पर पहुँच जाएगी झटपट.



उसे किसी टैग या
टिकट की ज़रूरत नहीं है.
बस आप डाक टिकट खरीदिए,
फिर उसे लिफ़ाफ़े पर
प्यार से चिपका दीजिए
ताकि डाकिया देख सके
कि पत्र बैरंग नहीं है
और आपने पत्र का
यात्रा शुल्क चुकाया है.



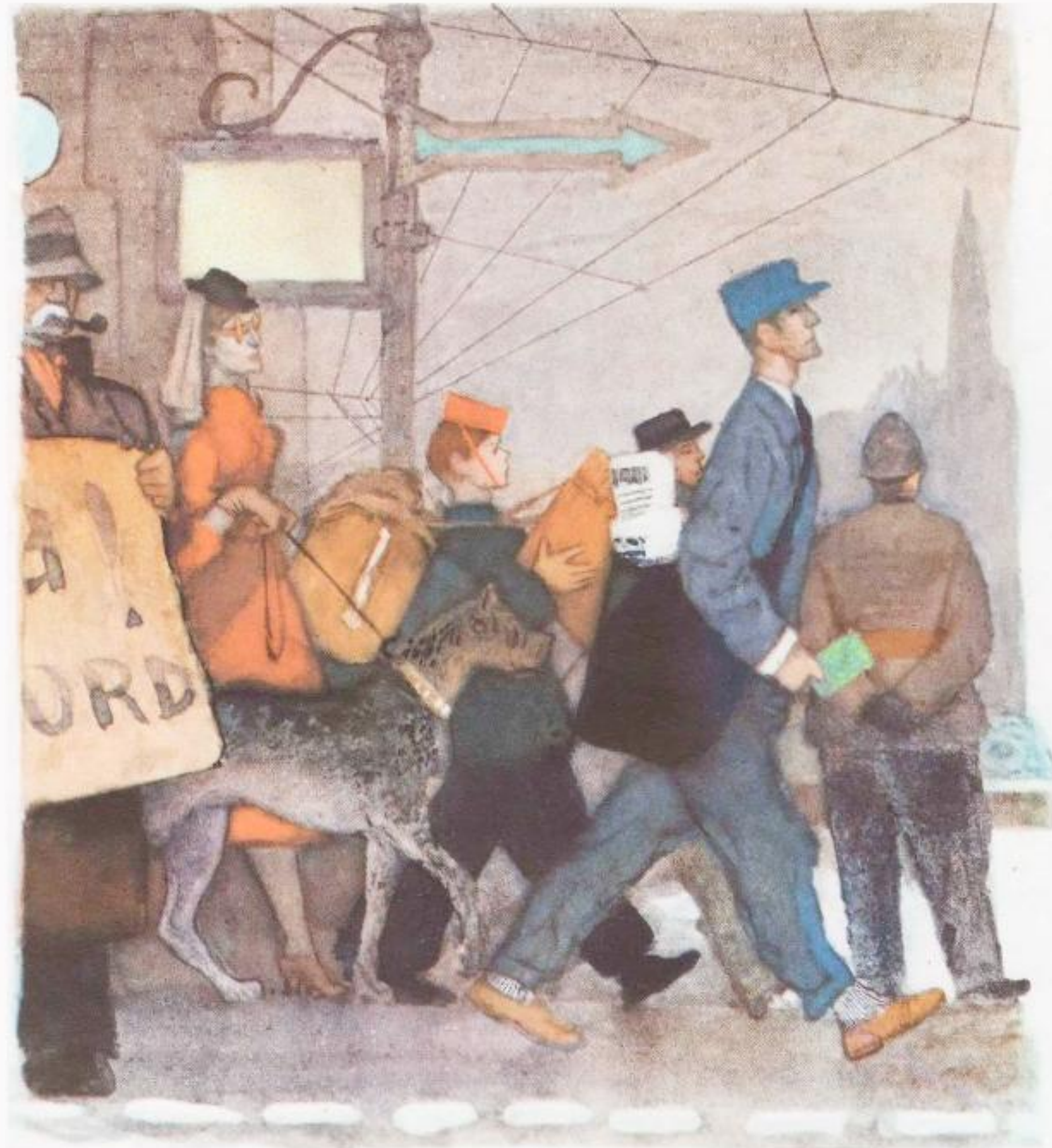


उसे न खाने,
न आराम की ज़रूरत है,
वो बस दोहराता है:
विशेष पत्र.
इंग्लैंड.
लंदन पश्चिम.
इलेवन बॉबकिन स्ट्रीट.



लंदन की सड़कों पर, बसें
रुक-रुक कर चलती हैं, और हर बस पर
कार्ड और साइनबोर्ड लगे होते हैं
साथ में विज्ञापनों की कतारें.
उनमें से एक में से आवाज़ आती है—
"अगला स्टॉप बॉबकिन स्ट्रीट! सब बाहर!"





बॉबकिन स्ट्रीट! बॉबकिन स्ट्रीट!
चिट्ठी लिखने वाले मिस्टर स्वीट.
उसके कदम हल्के और लचीले हैं,
उसके पैर लंबे और पतले हैं.



वह जिस घर की तलाश में है
उसके दरवाज़े पर "11" लिखा है.
वह जल्दी से दस्तक देता है.
और फिर कोई अंदर से खोलता है.



वह अपने बैग से एक चिट्ठी निकालता है
संकरे रेशमी पर्दों के पार
बटलर उसे पढ़कर, वापस देता है—
"मिस्टर जितकोव अब ब्राज़ील में है!"



जहाज अगले एक मिनट में
समुद्र के ऊपर होगा.
वो पश्चिम की ओर जाएगा
माल और लोगों को ले जाएगा.



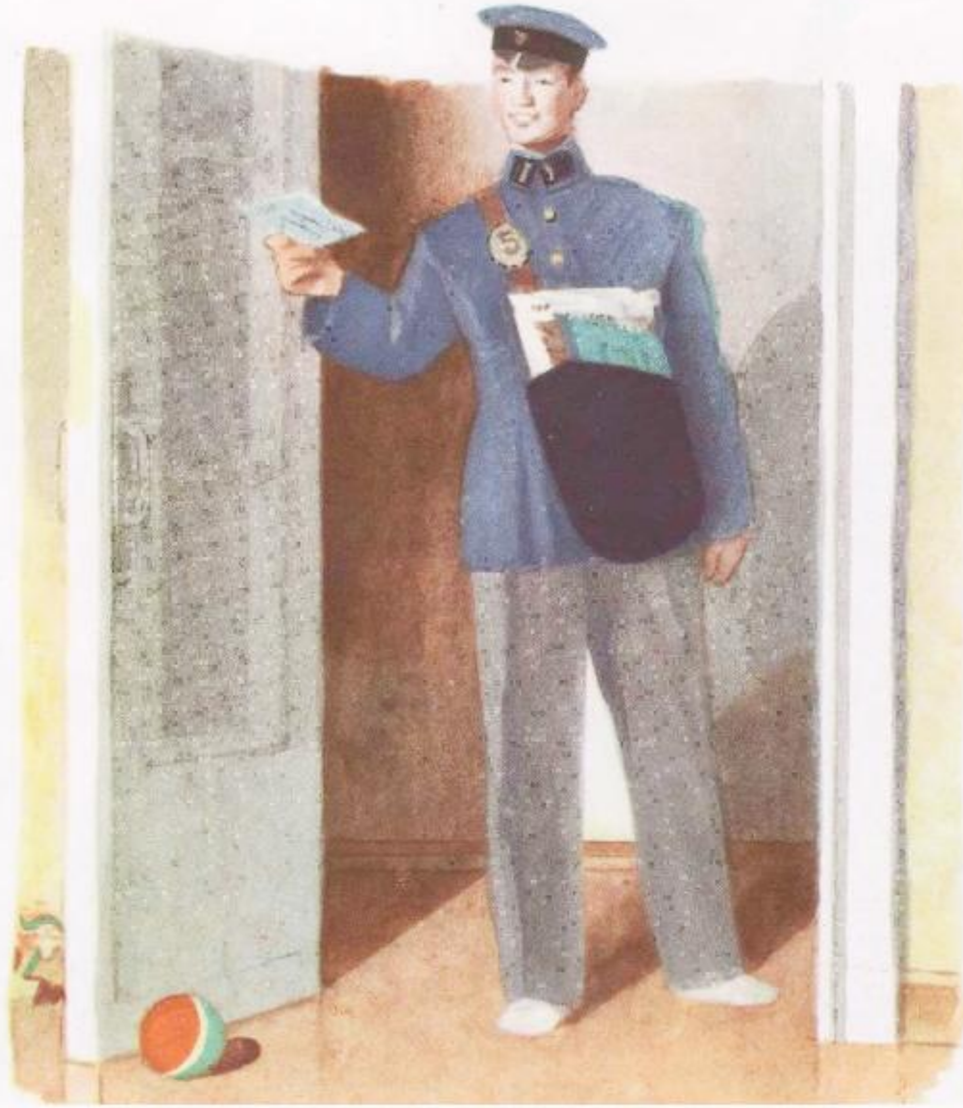
समुद्र पर
चलते हुए जहाज़ पर भी
डाकिया व्यस्त रहता है,
वो स्टीमर के पीछे
डाक छाँटता रहता है.



रियो की सड़कों पर,
ताड़ के पेड़ पर गर्म पत्ते लटके हैं,
और थका हुआ डॉन बेसिलियो
ब्राज़ील में पत्र खोलता है.

एक लिफ़ाफ़ा पूरी तरह से मुड़ा है
वो घिसाव से काफी सिकुड़ा है,
वो पसीने से तर हाथ में है
पर उसे कोई परवाह नहीं है.

कई हाथों से लिखे गए अक्षरों में
कई अलग-अलग पते लिखे हैं,
पर अंत में एक ज़रूरी संदेश है:
"पत्र लेनिनग्राद लौटओ!"



मेरे दरवाज़े पर कौन दस्तक देने आया
उसने पीछे बैग और आगे बैज लगाया,
लेनिनग्राद की सरकारी वर्दी में
टोपी से बूट तक नीले रंग में?
वो वही है,
वो वही है,
जो आपके और मेरे लिए लाता है डाक!

उसके हाथ में एक बार फिर से
वही विशेष पत्र है
जो वह पहले भी लाया था,
"अरे, जितकोव! यह मेरा नहीं है!
यह एक विशेष पत्र है!
इसपर तुम्हें हस्ताक्षर करने ही होंगे!"



मेरा पड़ोसी जल्दी से बिस्तर से उठा.
"वाह! देखो यह कितना दिलचस्प है!" उसने कहा.
"यह देखो! डाक विभाग द्वारा
मेरा पत्र उस हर जगह भेजा गया
मैं जहाँ-जहाँ भी घूमते हुए गया.



ज़मीन और समुद्र के पार
वफादारी से मेरी तलाश में,
वो पत्र राइन, थेम्स, अमेज़न नदियों
के शहरों में पहले पहुँचा!
"वो कहां-कहां से घूम-घूमकर,
आखिरकार मेरे पास आ पहुँचा!
डाकियों का तहेदिल शुक्रिया,
बिना शिकवा-शिकायत किए
वो दिन-रात काम करते हैं
वो हमेशा सही पते पर
डाक पहुंचाते हैं!"



SAMUIL MARSHAK

POSTMAN

Translated by Margaret Wettlin

Illustrations by Juvenaly Korovin

Edited by Evgeny Spirin, Siavsh Imany
Layout by Arvind Gupta, Evgeny Spirin

International project:
"Mini Progress and Mini Raduga"